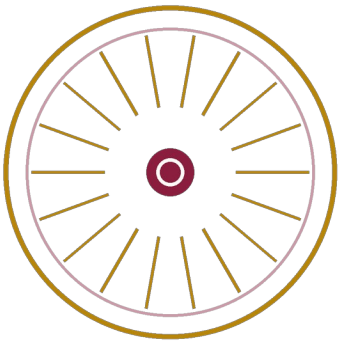

अध्याय 7: ज्ञानविज्ञानयोग

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **7.01**

> श्रीभगवानुवाच |
>
> मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युञ्जन्मदाश्रयः |
>
> असंशयं समग्रं मां यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु || **01** ||

हिन्दी अनुवाद:

श्री भगवान बोले—हे पार्थ! मुझमें अनन्य प्रेम से आसक्त मन वाला और मेरे ही आश्रित होकर योग में लगा हुआ तू, मुझको संपूर्ण विभूति, बल और ऐश्वर्य आदि गुणों से युक्त जिस प्रकार संशयरहित जानेगा, उसको सुन।

सरल व्याख्या:

भगवान यहाँ अर्जुन को यह बताने जा रहे हैं कि पूर्ण ज्ञान क्या है। वे कहते हैं कि जब मन पूरी तरह परमात्मा में टिक जाता है और साधक को यह विश्वास हो जाता है कि ईश्वर ही उसका एकमात्र सहारा है, तब उसे ईश्वर के वास्तविक स्वरूप का ऐसा ज्ञान मिलता है जिसमें कोई संदेह शेष नहीं रहता।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... ईश्वर पर पूर्ण आश्रित होकर ही उनके समग्र रूप को समझा जा सकता है।

श्लोक संख्या: **7.02**

> ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानमिदं वक्ष्याम्यशेषतः |
>
> यज्ज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते || **02** ||

हिन्दी अनुवाद:

मैं तेरे लिए इस रहस्यमयी ज्ञान को अनुभव (विज्ञान) सहित पूर्ण रूप से कहूँगा, जिसको जानकर इस संसार में फिर और कुछ भी जानना शेष नहीं रह जाता।

सरल व्याख्या:

यहाँ 'ज्ञान' का अर्थ है ईश्वर के परोक्ष स्वरूप को जानना और 'विज्ञान' का अर्थ है उस ज्ञान का साक्षात अनुभव करना। भगवान कह रहे हैं कि वे अर्जुन को वह पूर्ण सत्य बताएंगे जिसे जान लेने के बाद मनुष्य की जिज्ञासा शांत हो जाती है और उसे जगत की किसी अन्य विद्या की आवश्यकता नहीं रहती।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... आत्मज्ञान ही वह अंतिम सत्य है जो मनुष्य को पूर्णता प्रदान करता है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **7.03**

> मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये |
> यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः || **03** ||

हिन्दी अनुवाद:
हजारों मनुष्यों में कोई एक सिद्धि के लिए प्रयत्न करता है और उन प्रयत्न करने वाले सिद्धों में भी कोई एक ही मुझको तत्व से (यथार्थ रूप से) जानता है।

सरल व्याख्या:
परमात्मा की प्राप्ति का मार्ग अत्यंत दुर्लभ है। अधिकांश लोग संसार में ही उलझे रहते हैं। जो थोड़े बहुत लोग ईश्वर की खोज शुरू करते हैं, उनमें से भी बहुत कम लोग अंत तक पहुँच पाते हैं। और जो अंत तक पहुँचते हैं, उनमें से भी कोई विरला ही भगवान के वास्तविक मर्म को समझ पाता है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... सत्य की खोज के लिए असाधारण धैर्य और विशेष कृपा की आवश्यकता होती है।

श्लोक संख्या: **7.04**

> भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च |
> अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा || **04** ||

हिन्दी अनुवाद:
पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार—इस प्रकार यह आठ प्रकार से विभाजित मेरी 'अपरा' प्रकृति (जड़ प्रकृति) है।

सरल व्याख्या:
भगवान अपनी 'अपरा' प्रकृति का वर्णन कर रहे हैं, जिससे यह दृश्य जगत बना है। इसमें पाँच स्थूल तत्व (पंचमहाभूत) और तीन सूक्ष्म तत्व (मन, बुद्धि, अहंकार) शामिल हैं। यह सब ईश्वर की ही शक्ति का निचला स्वरूप है जो परिवर्तनशील और जड़ है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... दृश्य जगत और हमारा अहंकार, सब ईश्वर की ही मायावी शक्ति के विभिन्न रूप हैं।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **7.05**

> अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम् |
>
> जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत् || **05** ||

हिन्दी अनुवाद:

हे महाबाहो! यह (आठ प्रकार वाली) तो 'अपरा' है, इससे दूसरी को मेरी 'परा' प्रकृति (चेतन प्रकृति) जान, जो जीवस्वरूपा है और जिसके द्वारा यह संपूर्ण जगत धारण किया जाता है।

सरल व्याख्या:

जड़ प्रकृति के अलावा भगवान की एक 'चेतन' शक्ति भी है, जिसे 'परा' प्रकृति या जीवात्मा कहा जाता है। यही वह शक्ति है जो निर्जीव तत्वों में प्राण फूँकती है और पूरे ब्रह्मांड को चलाती है। इसी चेतन तत्व के कारण संसार का अस्तित्व बना हुआ है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... जड़ प्रकृति शरीर है और परा प्रकृति वह प्राण शक्ति है जो संसार को जीवित रखती है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **7.06**

> एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणीत्युपधारय |
> अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा || **06** ||

हिन्दी अनुवाद:

तू ऐसा समझ कि संपूर्ण भूत (प्राणी) इन दोनों प्रकृतियों से ही उत्पन्न होने वाले हैं; और मैं संपूर्ण जगत का उत्पत्ति तथा प्रलय (विनाश) हूँ।

सरल व्याख्या:

जड़ और चेतन के मिलन से ही सभी प्राणियों का जन्म होता है। भगवान स्पष्ट करते हैं कि वे ही इस पूरे ब्रह्मांड के आदि और अंत हैं। जैसे सोने से गहने बनते हैं और अंत में सोना ही रह जाता है, वैसे ही सब कुछ परमात्मा से निकलता है और अंत में उन्हीं में विलीन हो जाता है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा ही इस सृष्टि के परम स्रष्टा और संहारक हैं।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **7.07**

> मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनञ्जय |
> मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव || **07** ||

हिन्दी अनुवाद:
हे धनंजय! मुझके सिवा दूसरा कोई भी परम कारण नहीं है। यह संपूर्ण जगत सूत्र (धागे) में मणियों के सदृश मुझमें गुंथा हुआ है।

सरल व्याख्या:
यह गीता के सबसे प्रसिद्ध उदाहरणों में से एक है। जैसे एक माला के भीतर धागा छिपा रहता है और वही सभी मणियों को जोड़कर रखता है, वैसे ही भगवान इस संसार के कण-कण में छिपे हुए हैं। उनके बिना संसार का कोई अस्तित्व नहीं है, वे ही सबको एक सूत्र में पिरोए हुए हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... ईश्वर ही ब्रह्मांड का अदृश्य आधार और नियामक शक्ति है।

श्लोक संख्या: **7.08**

> रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः |
> प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु || **08** ||

हिन्दी अनुवाद:
हे कुन्तीपुत्र! मैं जल में रस हूँ, चंद्रमा और सूर्य में प्रकाश हूँ, संपूर्ण वेदों में 'ॐकार' हूँ, आकाश में शब्द हूँ और मनुष्यों में पुरुषत्व (सामर्थ्य) हूँ।

सरल व्याख्या:
भगवान अपनी व्यापकता समझा रहे हैं। वे किसी दूर लोक में नहीं, बल्कि वस्तुओं के मूल गुण में विद्यमान हैं। जल का स्वाद, सूरज की रोशनी, वेदों का सार और मनुष्य की कार्यक्षमता—ये सब ईश्वर की ही अभिव्यक्तियाँ हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... प्रकृति की हर विशेषता और शक्ति ईश्वर की ही उपस्थिति का प्रमाण है।

Satvaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **7.09**

> पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च तेजश्चास्मि विभावसौ |
>
> जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु || **09** ||

हिन्दी अनुवाद:

मैं पृथ्वी में पवित्र गंध हूँ, अग्नि में तेज हूँ, संपूर्ण भूतों में उनका जीवन (आयु) हूँ और तपस्वियों में तप हूँ।

सरल व्याख्या:

मिट्टी की सोंधी खुशबू, आग की तपन और किसी भी जीव के जीवित रहने की शक्ति—ये सब भगवान के ही स्वरूप हैं। जब कोई तपस्वी तप करता है, तो उस तप की शक्ति भी परमात्मा ही हैं। ईश्वर सूक्ष्म रूप से हर क्रिया और तत्व के मूल में स्थित हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... संसार की हर शुद्धता और जीवनी शक्ति परमात्मा का ही अंश है।

श्लोक संख्या: **7.10**

> बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम् |
>
> बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् || **10** ||

हिन्दी अनुवाद:

हे पार्थ! तू संपूर्ण भूतों का सनातन बीज (मूल कारण) मुझको ही जान। मैं बुद्धिमानों की बुद्धि और तेजस्वियों का तेज हूँ।

सरल व्याख्या:

जैसे एक विशाल वृक्ष एक सूक्ष्म बीज में समाया होता है, वैसे ही पूरी सृष्टि का आदि कारण ईश्वर हैं। बुद्धिमान व्यक्ति की सोचने की शक्ति और प्रभावशाली व्यक्ति का प्रभाव (ओज) भी उन्हीं की देन है। वे ही वह अविनाशी मूल हैं जिससे सब कुछ अंकुरित होता है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... समस्त अस्तित्व का मूल आधार और उत्तम गुणों का स्रोत परमात्मा ही हैं।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **7.11**

> बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम् |
> धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ || **11** ||

हिन्दी अनुवाद:

हे भरतश्रेष्ठ अर्जुन! मैं बलवानों का आसक्ति और कामनाओं से रहित बल हूँ और सब भूतों में धर्म के अनुकूल (शास्त्रसम्मत) काम हूँ।

सरल व्याख्या:

भगवान स्पष्ट करते हैं कि बलवान व्यक्ति की वह शक्ति जो दूसरों की रक्षा और कल्याण के लिए है, वह परमात्मा ही है। साथ ही, जो इच्छाएँ और कामनाएँ धर्म की मर्यादा के भीतर हैं और सृष्टि के चक्र को चलाने में सहायक हैं, वे भी ईश्वर का ही स्वरूप हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... निस्वार्थ शक्ति और मर्यादित इच्छाएँ ईश्वरीय गुणों की ही अभिव्यक्ति हैं।

श्लोक संख्या: **7.12**

> ये चैव सात्त्विका भावा राजसास्तामसाश्च ये |
> मत्त एवेति तान्विद्धि न त्वहं तेषु ते मयि || **12** ||

हिन्दी अनुवाद:

और जो भी सत्त्वगुण से उत्पन्न होने वाले भाव हैं तथा जो रजोगुण और तमोगुण से होने वाले भाव हैं, उन सबको तू मुझसे ही होने वाले जान; परन्तु वास्तव में उनमें मैं नहीं हूँ और वे मुझमें हैं।

सरल व्याख्या:

संसार के तीनों गुण (शांति, चंचलता और अज्ञान) परमात्मा की शक्ति से ही पैदा होते हैं। जैसे स्वप्न देखने वाले से स्वप्न की सृष्टि होती है, वैसे ही ये गुण ईश्वर पर आश्रित हैं। लेकिन ईश्वर इन गुणों के अधीन नहीं हैं, वे इनसे ऊपर और निर्लिप्त हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... सृष्टि के समस्त गुण ईश्वर से उपजे हैं, फिर भी वे उनसे परे और स्वतंत्र हैं।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **7.13**

> त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत् |
> मोहितं नाभिजानाति मामेभ्यः परमव्ययम् || **13** ||

हिन्दी अनुवाद:
इन गुणों के कार्य रूप तीनों प्रकार के भावों से यह सारा संसार मोहित हो रहा है, इसलिए इन तीनों गुणों से परे मुझ अविनाशी को वह तत्व से नहीं जानता।

सरल व्याख्या:
प्रकृति के तीन गुणों के जाल में फँसकर मनुष्य का विवेक ढँक जाता है। लोग बाहरी चमक-धमक और स्वभाव के खेल में इतने उलझ जाते हैं कि वे उस परम तत्व को नहीं देख पाते जो इन गुणों का स्वामी और अविनाशी है। यह संसार एक परदे की तरह है जो असली सत्य को छिपाए हुए है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... गुणों का सम्मोहन ही मनुष्य को ईश्वर के वास्तविक स्वरूप को जानने से रोकता है।

श्लोक संख्या: **7.14**

> दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया |
> मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते || **14** ||

हिन्दी अनुवाद:
क्योंकि यह अलौकिक अर्थात अति अद्भुत त्रिगुणमयी मेरी माया बड़ी दुस्तर है; परन्तु जो पुरुष केवल मुझको ही निरंतर भजते हैं, वे इस माया को तर जाते हैं।

सरल व्याख्या:
ईश्वर की माया (संसार का भ्रम) बहुत शक्तिशाली है, इसे अपने दम पर पार करना लगभग असंभव है। लेकिन जो साधक अहंकार छोड़कर पूरी तरह परमात्मा की शरण में आ जाता है, उसके लिए यह माया अपना प्रभाव खो देती है। ईश्वर की कृपा ही इस भवसागर से पार उतरने की एकमात्र नौका है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... पूर्ण शरणागति ही माया के बंधनों से मुक्त होने का एकमात्र मार्ग है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **7.15**

> न मां दुष्कृतिनो मूढाः प्रपद्यन्ते नराधमाः |
>
> माययापहृतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः || **15** ||

हिन्दी अनुवाद:
माया द्वारा जिनका ज्ञान हरा जा चुका है, ऐसे आसुरी स्वभाव को धारण किए हुए, नीच और दूषित कर्म करने वाले मूढ़ लोग मुझको नहीं भजते।

सरल व्याख्या:
जो लोग अहंकार, हिंसा और स्वार्थ में डूबे रहते हैं, उनकी बुद्धि माया के वश में होती है। वे सत्य को देख ही नहीं पाते और ईश्वर की शरण में आने के बजाय अपने विनाशकारी स्वभाव (आसुरी भाव) में लगे रहते हैं। ऐसे लोग कल्याण के मार्ग से विमुख रहते हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... अहंकार और बुरे कर्म मनुष्य की समझ को नष्ट कर देते हैं, जिससे वह ईश्वर से दूर हो जाता है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **7.16**

> चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन |
> आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ || **16** ||

हिन्दी अनुवाद:
हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ अर्जुन! उत्तम कर्म करने वाले अर्थार्थी, आर्त, जिज्ञासु और ज्ञानी—ये चार प्रकार के भक्त मुझको भजते हैं।

सरल व्याख्या:
ईश्वर को याद करने वाले चार तरह के लोग होते हैं: 1. आर्त (जो संकट में पड़कर पुकारते हैं), 2. जिज्ञासु (जो सत्य को जानने के लिए खोज करते हैं), 3. अर्थार्थी (जो सुख-सुविधा और धन पाने के लिए भजते हैं) और 4. ज्ञानी (जो ईश्वर को ही अपना लक्ष्य मानते हैं)।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... मनुष्य अपनी आवश्यकता और चेतना के स्तर के अनुसार ईश्वर की ओर मुड़ता है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **7.17**

> तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते |
> प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः || **17** ||

हिन्दी अनुवाद:
उनमें नित्य मुझमें स्थित, अनन्य प्रेम वाला ज्ञानी भक्त अत्यंत श्रेष्ठ है; क्योंकि ज्ञानी को मैं अत्यंत प्रिय हूँ और वह मुझको अत्यंत प्रिय है।

सरल व्याख्या:
यद्यपि चारों भक्त अच्छे हैं, लेकिन 'ज्ञानी' भक्त सबसे श्रेष्ठ है क्योंकि वह ईश्वर से कुछ मांगता नहीं, बल्कि स्वयं ईश्वर को ही चाहता है। वह हर क्षण परमात्मा के साथ एक होकर रहता है। भगवान कहते हैं कि ऐसे भक्त के प्रेम का कोई मोल नहीं है; वह ईश्वर का हृदय है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... निष्काम प्रेम और नित्य योग ही भक्ति की सर्वोच्च अवस्था है।

श्लोक संख्या: **7.18**

> उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम् |
> आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम् || **18** ||

हिन्दी अनुवाद:
ये सभी उदार (श्रद्धावान) हैं, परन्तु ज्ञानी तो साक्षात् मेरा स्वरूप ही है—ऐसा मेरा मत है; क्योंकि वह स्थिर बुद्धि वाला भक्त मुझमें ही अनन्य गति मानकर मुझमें ही स्थित है।

सरल व्याख्या:
भगवान कहते हैं कि जो भी मुझे पुकारता है, वह उदार और महान है। लेकिन ज्ञानी भक्त को मैं अपनी आत्मा मानता हूँ क्योंकि उसकी बुद्धि कहीं और नहीं भटकती। वह जानता है कि परमात्मा के सिवा कोई दूसरी गति या शरण नहीं है। वह परमात्मा में वैसे ही मिल गया है जैसे नदी समुद्र में।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... निस्वार्थ भक्त और भगवान में कोई भेद नहीं रह जाता।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **7.19**

> बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते |
> वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः || **19** ||

हिन्दी अनुवाद:

बहुत जन्मों के अंत में तत्वज्ञान को प्राप्त पुरुष 'सब कुछ वासुदेव (परमात्मा) ही है'—ऐसा मानकर मुझको भजता है, वह महात्मा अत्यंत दुर्लभ है।

सरल व्याख्या:

यह बोध कि "कण-कण में ईश्वर है" (वासुदेवः सर्वम्), अनेक जन्मों की साधना के बाद आता है। जब मनुष्य को हर जीव और हर परिस्थिति में केवल परमात्मा ही दिखने लगते हैं, तब वह पूर्णता को प्राप्त होता है। ऐसे महापुरुष इस संसार में बहुत कम होते हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... सर्वत्र परमात्मा के दर्शन करना ही ज्ञान की पराकाष्ठा है।

श्लोक संख्या: **7.20**

> कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः |
> तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया || **20** ||

हिन्दी अनुवाद:

उन-उन कामनाओं द्वारा जिनका ज्ञान हरा जा चुका है, वे लोग अपनी प्रकृति (स्वभाव) से प्रेरित होकर उस-उस नियम को धारण करके अन्य देवताओं को भजते हैं।

सरल व्याख्या:

जिन लोगों के मन में सांसारिक इच्छाएँ बहुत तीव्र होती हैं, वे अपनी छोटी-छोटी जरूरतों के लिए विभिन्न शक्तियों की पूजा करते हैं। वे अपने स्वभाव के वश में होकर कर्मकांडों में उलझ जाते हैं और उस एक अविनाशी परमात्मा को भूल जाते हैं जो सभी शक्तियों का मूल स्रोत है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... सांसारिक वासनाएँ मनुष्य की दृष्टि को संकुचित कर देती हैं, जिससे वह मूल सत्य से दूर हो जाता है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **7.21**

> यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति |
> तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् || **21** ||

हिन्दी अनुवाद:
जो-जो भक्त जिस-जिस देवता के स्वरूप को श्रद्धा से पूजना चाहता है, उस-उस भक्त की श्रद्धा को मैं उसी देवता के प्रति स्थिर कर देता हूँ।

सरल व्याख्या:
भगवान की उदारता देखिए—वे कहते हैं कि कोई भी मनुष्य जिस भी रूप में परमात्मा को देखना या पूजना चाहता है, वे उसकी उस श्रद्धा को और भी पक्का कर देते हैं। भगवान किसी की श्रद्धा को तोड़ते नहीं, बल्कि उसे सहारा देते हैं, क्योंकि अंततः हर मार्ग की जड़ परमात्मा ही हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... ईश्वर हर भक्त की भावना का सम्मान करते हैं और उसकी श्रद्धा को बल प्रदान करते हैं।

श्लोक संख्या: **7.22**

> स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते |
> लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्धि तान् || **22** ||

हिन्दी अनुवाद:
वह पुरुष उस श्रद्धा से युक्त होकर उस देवता का पूजन करता है और उस देवता से उन इच्छित भोगों को प्राप्त करता है, जो वास्तव में मेरे द्वारा ही विधान किए हुए हैं।

सरल व्याख्या:
जब कोई व्यक्ति किसी देवता की उपासना करता है और उसे उसका फल मिलता है, तो वह फल भी वास्तव में सर्वव्यापी परमात्मा की शक्ति से ही आता है। देवता केवल माध्यम हैं; सुख-दुख और कर्मफल का विधान करने वाली मूल सत्ता केवल एक ही ईश्वर है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... संसार में मिलने वाले सभी फल और सिद्धियाँ अंततः परमात्मा की ही व्यवस्था से प्राप्त होती हैं।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **7.23**

> अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम् |
> देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि || **23** ||

हिन्दी अनुवाद:

परन्तु उन अल्प बुद्धि वालों का वह फल नाशवान है; देवताओं को पूजने वाले देवताओं को प्राप्त होते हैं और मेरे भक्त मुझको ही प्राप्त होते हैं।

सरल व्याख्या:

भगवान यहाँ एक बड़ा भेद समझा रहे हैं। जो लोग छोटी-छोटी सांसारिक चीजों के लिए देवताओं को पूजते हैं, उन्हें मिलने वाला सुख भी अस्थायी (नाशवान) होता है। लेकिन जो सीधे उस एक अविनाशी परमात्मा की शरण लेते हैं, वे हमेशा के लिए परमात्मा में ही मिल जाते हैं। लक्ष्य जितना बड़ा होगा, उपलब्धि भी उतनी ही महान होगी।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... अस्थायी सुखों के पीछे भागने के बजाय शाश्वत परमात्मा की भक्ति ही श्रेष्ठ है।

श्लोक संख्या: **7.24**

> अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः |
> परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम् || **24** ||

हिन्दी अनुवाद:

बुद्धिहीन पुरुष मेरे सर्वश्रेष्ठ, अविनाशी और परम भाव को न जानते हुए, मुझ अदृश्य (निराकार) को शरीर धारण करने वाला (साकार) मानते हैं।

सरल व्याख्या:

लोग अक्सर भगवान को केवल एक शरीर या मूर्ति तक सीमित समझ लेते हैं। वे यह नहीं जान पाते कि ईश्वर अजन्मा, अविनाशी और सर्वव्यापी है। भगवान कहते हैं कि जो मुझे केवल एक साधारण मनुष्य की तरह जन्म लेने वाला समझते हैं, वे मेरे उस असली स्वरूप से अनजान हैं जो आदि और अंत से रहित है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा की सत्ता शरीर और सीमाओं से परे है; उन्हें केवल साकार रूप तक सीमित मानना अज्ञान है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **7.25**

> नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः |
> मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम् || **25** ||

हिन्दी अनुवाद:

अपनी योगमाया से छिपा हुआ मैं सबके सामने प्रकट नहीं होता; इसलिए यह अज्ञानी संसार मुझ अजन्मा और अविनाशी परमात्मा को तत्व से नहीं जानता।

सरल व्याख्या:

जैसे बादल सूर्य को ढँक लेते हैं, वैसे ही भगवान की 'योगमाया' उन्हें सामान्य आँखों से ओझल रखती है। जब तक हृदय में अहंकार और अज्ञान है, तब तक ईश्वर का अनुभव नहीं होता। केवल शुद्ध मन वाले ही उस परदे के पीछे छिपे परमात्मा को देख पाते हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... ईश्वर सर्वत्र होकर भी माया के आवरण के कारण अज्ञानियों के लिए अदृश्य रहते हैं।

श्लोक संख्या: **7.26**

> वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन |
> भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन || **26** ||

हिन्दी अनुवाद:

हे अर्जुन! पूर्व में व्यतीत हुए, वर्तमान में स्थित और भविष्य में होने वाले संपूर्ण भूतों को मैं जानता हूँ; परन्तु मुझको कोई भी (भक्ति रहित पुरुष) नहीं जानता।

सरल व्याख्या:

परमात्मा काल (समय) के स्वामी हैं। उन्हें सब पता है कि कब क्या हुआ था और आगे क्या होगा। लेकिन मनुष्य की बुद्धि सीमित है, वह ईश्वर की पूरी महिमा को तब तक नहीं समझ सकता जब तक कि वह पूरी तरह समर्पित न हो जाए।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... ईश्वर त्रिकालदर्शी (तीनों समय को जानने वाले) हैं, जबकि जीव उनकी माया में उलझा रहता है।

Satvaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **7.27**

> इच्छाद्वेषसमुत्थेन द्वन्द्वमोहेन भारत |
> सर्वभूतानि सम्मोहं सर्गे यान्ति परन्तप || **27** ||

हिन्दी अनुवाद:
हे भरतवंशी अर्जुन! संसार में इच्छा और द्वेष से उत्पन्न होने वाले सुख-दुख आदि द्वन्द्व रूप मोह से संपूर्ण प्राणी अत्यंत अज्ञान को प्राप्त हो रहे हैं।

सरल व्याख्या:
मनुष्य क्यों नहीं जान पाता कि सत्य क्या है? क्योंकि वह 'पसंद' (इच्छा) और 'नापसंद' (द्वेष) के चक्कर में फँसा है। जब तक मन सुख-दुख, राग-द्वेष के उतार-चढ़ाव में उलझा रहता है, तब तक वह मोह की नींद में सोया रहता है और वास्तविकता को नहीं देख पाता।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... राग-द्वेष का द्वन्द्व ही मनुष्य के अज्ञान और भटकाव की मुख्य जड़ है।

श्लोक संख्या: **7.28**

> येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम् |
> ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः || **28** ||

हिन्दी अनुवाद:
परन्तु जिन पुण्यकर्मा पुरुषों के पाप नष्ट हो गए हैं, वे द्वन्द्व रूप मोह से मुक्त हुए दृढ़ निश्चय वाले भक्त मुझको ही भजते हैं।

सरल व्याख्या:
जिन लोगों ने शुद्ध आचरण और निस्वार्थ सेवा से अपने मन के विकारों (पापों) को धो डाला है, वे ही इस राग-द्वेष के जाल से बाहर निकल पाते हैं। ऐसे लोग ही पूरे निश्चय और अडिग विश्वास के साथ परमात्मा की भक्ति में लग पाते हैं, क्योंकि उनका मन अब बाहरी द्वन्द्वों से विचलित नहीं होता।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... पवित्र आचरण ही मनुष्य को मोह से मुक्त कर सच्ची भक्ति की ओर ले जाता है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **7.29**

> जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये |
>
> ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाखिलम् || **29** ||

हिन्दी अनुवाद:

जो पुरुष बुढ़ापे और मृत्यु से छूटने के लिए मेरा आश्रय लेकर प्रयत्न करते हैं, वे उस ब्रह्म को, संपूर्ण अध्यात्म को और संपूर्ण कर्म को जानते हैं।

सरल व्याख्या:

जो साधक इस नश्वर शरीर के बंधनों (जन्म-मृत्यु) से मुक्त होना चाहते हैं और परमात्मा को अपना सहारा बना लेते हैं, उन्हें वह पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो जाता है। वे समझ जाते हैं कि 'ब्रह्म' क्या है, 'आत्मा' क्या है और 'कर्म' का रहस्य क्या है। उनकी दृष्टि पूर्ण हो जाती है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... ईश्वर की शरण में आने पर मनुष्य को जीवन के सभी रहस्यों का बोध हो जाता है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **7.30**

> साधिभूताधिदैवं मां साधियज्ञं च ये विदुः |
> प्रयाणकालेऽपि च मां ते विदुर्युक्तचेतसः || **30** ||

हिन्दी अनुवाद:

जो पुरुष अधिभूत, अधिदैव और अधियज्ञ के सहित मुझको जानते हैं, वे युक्त चित्त वाले पुरुष अंत समय में भी मुझको ही जानते हैं।

सरल व्याख्या:

जो साधक संसार के भौतिक स्वरूप (अधिभूत), देवताओं की शक्तियों (अधिदैव) और समस्त कर्म-यज्ञों (अधियज्ञ) के भीतर केवल परमात्मा को ही व्याप्त देखते हैं, उनका मन हमेशा ईश्वर में टिका रहता है। ऐसे महापुरुष मृत्यु के समय भी व्याकुल नहीं होते और शांतिपूर्वक परमात्मा में ही विलीन हो जाते हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... जीवन भर का अभ्यास ही मृत्यु के अंतिम क्षणों में परमात्मा की स्मृति को सुरक्षित रखता है।

Satyaanubhuti Ashram

॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानविज्ञानयोगो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥

Satyaanubhuti Ashram